आर्योदया

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 351 | ARYA SABHA MAURITIUS | *16th Jan. to 23rd Jan. 2017*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

सन्तुलित जीवन की व्यापकता

L'IDEALE DE LA VIE : TROUVER LE JUSTE MILIEU ENTRE LE SOCIALISME ET L'INDIVIDUALISME

ओ३म् ।। अन्यदेवाहुः सम्भवादन्य दाहुरसम्वात् ।
इति शुश्रुम् धीराणां यं नस्तद्विचचक्षिर ।।

यजु० ४०/१०

Om ! Anyadevāhuha sambhava danyada hurasambha.
Iti shushruma dheerānām ye nastad-vichachakshire.

Yajur Veda 40/10

cont. from last issue no. 350

Le Socialisme

Cela signifie dans ce contexte la vie sociale, c'est-à-dire, vivre uni et discipliné en s'entraidant et en accomplissant ses devoirs envers la société et en témoignant sa révérence à Dieu. En conséquence ce mode de vie entraine sans son sillage un élan de solidarité et de l'unité sans faille parmi le peuple, et de ce fait ce peuple (y compris leur pays) se transforme en une force ou une puissance formidable, habilitée à faire face et à venir à bout des ennemis plus puissants. Tout ceci nous apprend une grande leçon de la vie : L'union fait la force.

A ce sujet des exemples abondent dans l'histoire du monde, dans la nature et aussi bien que dans la vie de tous les jours. Nous citons quelques exemples typiques à ce propos.

(i) Le mouvement pour l'indépendance de l'Inde connut un nouvel essor quand les hindous et les musulmans se regroupèrent en un seul bloc et firent cause commune. Cet élan de l'unité et de solidarité fit trembler les anglais, qui, à la longue durent céder l'Inde au peuple indien en 1947.

(ii) En 1904 un petit pays comme Japon put vaincre un très grand et puissant pays comme la Russie, grâce à l'unité et à la solidarité de son peuple.

(iii) Dans la nature, les fourmis sont parmi les plus petites créatures. Malgré ce désavantage physique elles peuvent vaincre un éléphant qui est de taille énorme et très puissant, si elles s'unissent et agissent de concert.

(iv) Quand on est en présence des brins de fil ou des fibres dispersés, une question de bon sens nous vient à l'esprit. Bien qu'ils soient individuellement très faibles et très fragiles, ils peuvent devenir une force sur laquelle l'on pourra compter. S'ils sont tissés (réunis ou tordus) ils seront transformés en une grosse corde qui pourra servir à attacher et contrôler un animal aussi grand et fort qu'un éléphant. *(cont. on pg 3)*

प्रवासी भारतीय दिवस

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के., आर्य रत्न

इस वर्ष की ७ जनवरी से ९ जनवरी तक कर्नाटक प्रदेश में स्थित बंगालुरु (पुराना नाम बैंगलोर) महानगर में चौदहवाँ प्रवासी भारतीय दिवस बड़े ही उत्साहवर्धक वातावरण में विभिन्न देशों से पधारे हुए भारतीय मूल के हज़ारों नर-नारियों, युवा-वृद्धों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। अनेक सत्रों में आयोजित विविध कार्यक्रमों के साथ यह ऐतिहासिक घटना स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय हो गया।

मॉरीशस से माननीय मन्त्री पृथ्वीराजसिंह रूपन, माननीया मालिनी सेवोकसिंह, भूतपूर्व मन्त्री मदन दल्लू, श्री मुकेश्वर चुन्नी एवं धार्मिक संस्थाओं से श्री राजेन्द्र अरुण तथा इन पंक्तियों के लेखक भारतीय सरकार के निमन्त्रण पर तृदिवसीय कार्यक्रमों में स्पीकर के रूप में उपस्थित हुए थे। साथ ही श्री महेन उचाना जी के नेतृत्व में बीसियों जन इस अविस्मरणीय प्रवासी दिवस में सम्मिलित हुए।

७ जनवरी को विदेश मन्त्रालय और युवा एवं क्रीड़ा मन्त्रालय के संयुक्त सहयोग से 'युवा प्रवासी भारतीय दिवस' का उद्घाटन साढ़े नौ बजे प्रातःकाल में किया गया। युवा एवं क्रीड़ा मन्त्री श्री विजय गोयल और विदेशी मामलों के राज्य मन्त्री डा०वी०के० सिंह विशिष्ट अतिथि थे तथा स्यूरिनाम के उपराष्ट्रपति महामहिम माइकेल आश्विन अधीन मुख्य अतिथि थे।

प्रभावशाली व्याख्यानों को सुनने के पश्चात् विभिन्न देशों से आये हुए प्रतिनिधियों ने एक विशाल भवन में एक अभूतपूर्व प्रदर्शनी देखी। इस प्रदर्शनी द्वारा सभी ने भारत के तीव्र विकास के सजीव चित्र पाये। प्राचीन और अर्वाचीन भारतीय इतिहास की एक झाँकी बड़े आकर्षक रूप में प्रदर्शित थी।

८ जनवरी के पूर्वाह्न में कई व्याख्यानों के पश्चात् **प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** का बीज वक्तव्य हुआ। उन्होंने अनेक देशों से आये हुए प्रतिनिधियों और विशाल जन-समूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उस अवसर के मुख्य अतिथि थे पुर्तगाल के प्रधानमन्त्री माननीय डा० आन्तोनिओ कोस्ता।

९ जनवरी को प्रातःकाल नौ बजे प्रथम सत्र प्रारम्भ हुआ। पूर्ण अधिवेशन (Plenary Session) के दौरान अनेक प्रश्नों के उत्तर बड़ी बुद्धिमानी पूर्वक दिये गए। शाम को पाँच बजे सम्मान समारोह भारतीय गणतन्त्र के राष्ट्रपति महामहिम प्रणव मुकर्जी की उपस्थिति में हुआ।

इस शुभावसर पर विविध क्षेत्रों में सेवा करने वाले निम्नलिखित व्यक्ति सम्मानित हुए :-

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

कालचक्र का फेर

संसार का संचालक परमात्मा की कृपा से गतिमान समय नियमित रूप से व्यतीत हो रहा है। समयानुसार सुबह सूर्योदय होता है फिर दिवसकाल के बाद सायंकाल को समय पर सूर्यास्त होता है। सूर्य ओझल हो जाने पर रात्रि होती है और पुनः प्रातःकाल होता है। इसी प्रकार रातदिन व्यतीत होते जा रहे हैं और समय आगे बढ़ता जा रहा है।

हमने सुविधा जनक जीवन गुज़ारने के लिए समय को दिनों, सप्ताहों, पक्षों, महीनों और वर्षों में विभाजित किया है। इसी कालचक्र के फेर में बीते वर्षों की तरह सन् २०१६ का वर्ष बीत गया और हमने नूतन वर्ष का स्वागत किया। नव वर्ष का आनन्द लेते हुए अगर हम नवीन विचारों, सुयोजनाओं तथा उद्देश्यों के अनुकूल अपने अनमोल समय का सदुपयोग करते जाएँगे तो अवश्य ही हमारा जीवन बढ़ते समय के साथ विकसित होता जाएगा। यदि हम ज़िदगी यूँ ही गुज़ारते जाएँगे तो २०१७ का वर्ष भी समाप्त होकर हमें पीछे छोड़ देगा। अतः समय का पालन करना हमारा धर्म है तथा कर्मयोगी बन कर हर पल का सदुपयोग करना हमारा कर्तव्य है, अन्यथा कालचक्र के फेर में हम फँसते जाएँगे।

सृष्टिकर्ता परमेश्वर की कृपा से सभी ग्रह-उपग्रह गतिशील हैं, उसी की इच्छानुसार पृथ्वी क्रांतिवृत्त पर सूर्य की परिक्रमा करती है और एक मास की परिक्रमा के पश्चात् एक राशि से दूसरी राशि पर पहुँचती है।

जिसे अवधि को संक्रान्ति कहते हैं। इसी तरह बारह राशियों के नामों के आधार पर बारह संक्रान्तियाँ होती है। जिनमें 'मकर संक्रान्ति' को एक पर्व के रूप में मानकर उसको विशेष महत्व देते हैं, क्योंकि इस अवधि में पृथ्वी सूर्य के उत्तर में पहुँचती है और दिन में प्रचुर प्रकाश होने लगता है तथा रात्रि छोटी हो जाती है। मकर संक्रान्ति से सौर्य मण्डल में परिवर्तन होने लगता है, क्योंकि सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर नज़र आता है और दिन लम्बे होने लगते हैं।

'मकर संक्रान्ति' सौर्य वर्ष है, जो हमारे जीवन में आनन्द प्रदान करता है। इस पर्व को बड़े ही भक्ति-भाव से हमने आयोजन किया।

हम संसार के सर्वश्रेष्ठ प्राणी माने जाते हैं। ईश्वर ने हमें सोचने, समझने, विद्या ग्रहण करने के लिए बुद्धि तथा विवेक-शक्ति दी है, जो भी व्यक्ति आज ज्ञान-विज्ञान के ज़माने में गतिमान समय के आधार पर अपने सामर्थ्य अनुसार पुरुषार्थ करता जाएगा वह उन्नतिशील होगा और जो इंसान समय का दुरुपयोग करेगा, वह कई कठिनाइयों का सामना करता रहेगा। कालचक्र के फेर में उसका जीवन उलझता जाएगा।

पाठक वृंद ! हम अगर आर्यसमाज के दस नियमों का पालन करते हुए देश, काल, परिस्थिति तथा अपनी योग्यतानुकूल जीने की आदत डालेंगे को एक सुयोग्य मानव बनकर भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख-शान्ति और आनंद प्राप्त करके विकसित होते जाएँगे तो यह नूतन वर्ष तथा मकर संक्रान्ति पर्व हमारे लिए हितकारी सिद्ध होंगे, हर एक नया दिन हमें नये होश और जोश के साथ जीने के लिए प्रेरित करेगा।

बालचन्द तानाकूर

वर्षगाँठ का आयोजन

प्रेमिला तूफ़ानी, शास्त्री

बहुत से लोग अपने-अपने तरीक़े से अपना जन्म-दिवस मनाते हैं। आर्य जन अपने परिवार के किसी सदस्य की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में देवयज्ञ का आयोजन अवश्य ही करते हैं। जन्म-दिवस मनाने का यह एक बड़ा ही प्रशंसनीय तरीक़ा है। यज्ञ के दौरान कुछ विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ दी जाती हैं, जिनमें एक मन्त्र इस प्रकार है –

ओ३म् ।। उप प्रियं पनिप्नतं युवामाहुति वृधम्
अगन्म बिभ्रतो नमो दीर्घमायुः कृणोतुमे ।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

गतांक से आगे

त्यागमूर्ति : लखावती हरगोबिन

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

उसका पारिवारिक जीवन तो सफल रहा।उसके साथ ही अपने व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन का दायरा बढ़ाकर सामाजिक जीवन में प्रवेश किया। कुलवन्ती भंजन के साथ आर्यसमाज की कन्या पाठशाला में जो प्रशिक्षण पाया था अब उसको सामाजिक जीवन में ढालने का समय आ गया था। यूँ तो विवाह से पहले ही यज्ञ-हवन, भजन-कीर्तन में भाग लेती ही थी। वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में हिन्दी या संस्कृत में अभ्यास करके लोगों के सामने भाषण भी देती थी। तभी से वाक्यशक्ति का विकास हो गया था। शादी के बाद भी हिन्दी पढ़ाने का, सत्संग करने का या महिलाओं को उपदेश देने का कार्यक्रम छोटे पैमाने पर पेश करती रहती थी। हालाँकि मंदिर नहीं था घर-घर पर जाकर ये सब कार्यक्रम आयोजित करती थीं। पर एक आर्य मंदिर न होने की बात उसे बहुत अखरती थी।

उन दिनों आर्य सभा मोरिशस का प्रचार कार्य ज़ोरों पर था। परोपकारिणी और प्रतिनिधि सभाएँ दोनों विलीन होकर नाम ले लिया था 'आर्य सभा'। और मुख पत्र बन गया था 'आर्योदय'। सन् १९६५ के ८ अगस्त को आर्य सभा में आर्य महिला मण्डल का पुनः गठन हुआ। यद्यपि श्रीमती लखावती का जीवन बहुत ही व्यस्थ था अपने गृहस्थ जीवन, अपने पारिवारिक जीवन और अपने अध्यापन से फिर भी कर्त्तव्य के सामने उसने पीछे हटने का नाम न लिया। अपने गुणों के प्रदर्शन का सुनहरा मौका था। समय निकाल कर मण्डल में प्रवेश किया। शोभा बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि अपनी बहनों का जीजान से सेवा देने के लिए। मंडल में प्रवेश करने के बाद जब पंडिता द्रोपदी माताबदल का देहावसान हो गया तो लम्बे समय तक मंत्री का पद सम्भाला। फिर सुश्री सुदेवी भीमा के प्रधान पद छोड़ने के बाद पाँच वर्षों तक प्रधाना के पद से महिला मण्डल के लिए अपना तन-मन-धन न्योछावर कर दिया। उसने मोरिशस भर का दौरा करके अनेक महिला समाजों की स्थापना की। उसे सहयोग और सहायता मिली श्रीमती डोमा, यशोदा फागू सत्यनिष्ठा नन्दलाल, सावित्री गोपी, सौभाग्यवती पावाकेल, लक्षमिन नियूर की इस प्रकार मंत्री और प्रधाना के पद से उसने अनेक कार्य किये मंडल के नाम पर। दो प्रदर्शिनियों का आयोजन किया। एक का उद्घाटन तत्कालीन प्रधान मंत्री की धर्म पत्नी श्रीमती सरोजिनी जगनाथ ने किया था और दूसरे का डॉ० प्रेम नबाब सिंह ने।उन प्रदर्शिनियों में आर्य महिला समाजों की सदस्याओं द्वारा मिले-कढ़े-बुने कपड़े बेचे गए थे। जिसकी आय से लखावती जी ने आर्य महिला मण्डल के नाम पर आर्यसभा में दस हज़ार रुपये की एक स्थिर निधि रखी। इस दस हज़ार की निधि के व्याज के पैसे से महिलाओं की सेवा-कार्य में सहायता पहुँचायी जाएगी।

आर्य समाज की स्थापना हुए आधी शताब्दी से अधिक हो गई थी पर कभी किसी महिला को आर्य सभा की कार्यकारिणी कमिटि की सदस्या नहीं बनाई गई थी। लखावती पहली महिला होगी जो सन् १९७३ ई० में त्रैवार्षिक चुनाव में स्वतन्त्र उम्मेदवार के रूप में खड़ी हुई थी और उसे सफलता भी प्राप्त हुई थी। जब सफल हो गई तो अन्तरंग सभा में मिल-जुल कर सेवा कार्य करने लगीं। विविध उपसमितियों के अन्दर सदस्य के रूप में काम किया। पुरोहित मंडल में भी सेवा-कार्य देने लगी तभी पुरोहित मंडल में पुस्तक प्रकाशन के लिए दस हज़ार रुपये की निधि स्थापित की थी।

तीन वर्ष बाद १९७३ के त्रैवार्षिक चुनाव में फिर एक बार खड़ी हुई। सफलता प्राप्त करने के पश्चात् फिर तीन वर्षों तक काम किया। पाँच-छः उपसमितियों में काम किया। अब की बार देश, विदेश की यात्रा की। १९७५ में जब आर्य समाज की स्थापना की शती मनायी जा रही थी तो आर्य सभा की ओर से आर्य महिला मण्डल का प्रतिनिधित्व किया था। महिला सम्मेलन का उद्घाटन किया था अपने कर कमलों द्वारा इससे पहले १९७३ में जब मोरिशस में अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन लगा था तो उन्हें भारी जिम्मेदारी दी गयी थी।उन जिम्मेदारियों को बखुभी निभाई थी। उन्होंने देशी और विदेशी महिलाओं के सहयोग से आर्य महिला सम्मेलन का सफल आयोजन किया था।

उन्होंने भारत के अलावा इंग्लैण्ड की राजधानी लण्दन में और फ्रांस की राजधानी पेरिस में हवन-यज्ञ और भजन-कीर्तन का प्रोग्राम रखा था। वे जहाँ जातीं उन्हें दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने की चिन्ता होती थी। सच्चे अर्थ में वे दयानन्द और आर्यसमाज के सिद्धान्तों को शिरोधार्य करती थी और मृत्यु पर्यन्त निभाया।

लखावती ने केवल वाणी का प्रयोग किया वरन लेखन कार्य से भी सेवा करती रही। वाणी का प्रयोग भाषण, भजन करने में और पाणी से लेखन कार्य करती थी और नेक कार्यों के लिए दान भी देती थीं। उन्होंने तीन रचनाएँ कीं – (१) मोरिशस महिला समाज का इतिहास (२) लेखों का संग्रह 'महिला स्मृति' (३) स्मृति शेष अपनी एक मात्र पुत्री की याद में जब १९९० में सर्विस से अवकाश लिया और उनका (Lumpsum) (धन राशि) मिला तो बच्चों की भलाई के (Beau Sejour, Belle Rose) सरकारी पाठशाला, बेचू माधू सरकारी पाठशाला, बेल रोज़ रोमेन कैथोलिक स्कूल तथा डी०ए०वी० कालेज (आर्य सभा द्वारा संचालित) के लिए पाँच-पाँच हज़ार रुपयों की स्थिर निधियाँ रखीं। यहाँ तक कि उन्होंने अपनी अध्यापिका कुलवन्ती भंजन जो अध्यापन कार्य से वर्षों पहले अवकाश ले चुकी थीं, उनको भी डी०ए०वी० कालेज के नाम पर पाँच हज़ार रुपये की निधि रखने की प्रेरणा दी । मोरिशस के अलावा उन्होंने भारत में भी भारतीय विद्यार्थियों के सहायतार्थ स्थिर निधियाँ रखीं, जैसे -

करोल बाग, आर्यसमाज - रु० ५,०००
सांताक्रूज, आर्यसमाज - रु० ५,०००
काकड़वादी, आर्यसमाज - रु० २,०००
टंकारा , आर्यसमाज - रु० १,०००
अजमेर ऋषि उद्यान - रु० ३,०००

१९९४ में गयासिंह आश्रम की स्वर्ण जयन्ती जब मनायी जा रही थी तो आर्य सभा की ओर से उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया गया था। उनका सेवा-कार्य केवल समाज तक ही सीमित नहीं था। जहाँ भी आवश्यकता पड़ती थी वहाँ सहायता देने में पीछे नहीं रहती थीं। तत्कालीन सरकार भी उनकी सेवावृत्ति से भली-भाँति अवगत हो गयी थी। इसलिए १९९५ में राष्ट्रीय दिवस के शुभ मौके पर मोरिशस की सरकार ने उनको 'राष्ट्रपति प्रतिष्ठा पद' प्रदान किया था। रेडियो द्वारा जब १२ मार्च को स्वतन्त्रता दिवस के पावन अवसर पर उनका नाम एलान किया गया तो सारे देश में प्रसन्नता की लहर फैल गयीं। जगह-जगह से फोन द्वारा बधाई की प्राप्त होने लगी। कितने शाखा समाज में सम्मानित की गई ।

जब समाज की सेवा करने के लिए मैदान में उतरते हैं तो प्रशंसा के साथ साथ अपमान भी सहन करने की शक्ति होनी चाहिए। और जहाँ प्रजातन्त्रात्मक ढंग से नियमित रूप से निर्वाचन होता है तो वहाँ अपमान किया जाता है। विचारों का प्रचार होता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व कभी- कभी न गण्य हो जाता या; गौण समझा जाता है। पूर्व में जितने काम किए होते हैं यदि लोगों को प्रभावित न कर पाते तो हार निश्चित होती है।

जब तक चुनाव की गुँजाईश नहीं थी काम चलता रहा १९६५ से १९८४ तक लेकिन १९८५ के चुनाव में हार गयी लेकिन अपना सामाजिक कार्य जारी रखा। ऐसे लोग बड़ी सभा में रहे ना रहे काम और अधिक तेज़ी से होता है। उसी समय सरकारी ज़मीन पर एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया जिसमें बेशुमार धन लगाया। आज उनका बनाया हुआ 'आर्य मंदिर' ठोस धरोहर के रूप में खड़ा है और भविष्य में भी खड़ा होकर उनके त्याग और तपस्या का प्रतीक होगा।

मरने के बाद सब कुछ समाप्त हो जाता है। केवल सेवा का प्रतीक रह जाता है और लिखी हुई पुस्तकें रह जाती हैं याद के रूप में ।

प्रवासी भारतीय दिवस

पृष्ठ १ का शेष भाग

Pravasi Bharatiya Samman Awardees

Name	Country	Field
Dr Gorur Krishna Harinath	Australia	Community Service
Rajasekharan Pillai Valavoor Kizhakkathil	Bahrain	Business
Antwerp Indian Association	Belgium	Community Service
Nazeer Ahamed Mohamed Zackiriah	Brunei	Community Service
Mukund Bhikhubhai Purohit	Canada	Business
Nalinkumar Sumanlal Kothari	Djibouti	Community Service
Vinod Chandra Patel	Fiji	Social Service
Raghunath Marie Antonin Manet	France	Arts & Culture
Lael Anson E Best	Israel	Medical Science
Sandip Kumar Tagore	Japan	Arts & Culture
Ariful Islam	Libya	Community Service
Tan Sri Dato Muniandy Thambirajah	Malaysia	Education and Community Service
Pravind Kumar Jugnauth	Mauritius	Public Service
Antonio Luis Santos da Costa	Portugal	Public Service
Raghavan Seetharaman	Qatar	Business Management
Zeenat Musarrat Jafri	Saudi Arabia	Education
Singapore Indian Association	Singapore	Community Service
Carani Balaraman Sanjeevi	Sweden	Medicine
Susheel Kumar Saraff	Thailand	Business
Winston Chandarbhan Dookeran	Trinidad & Tobago	Public Service
Vasudev Shamdas Shroff	United Arab Emirates	Community Service
India Social and Cultural Centre	United Arab Emirates	Philanthropy and Community Service
Priti Patel	United Kingdom	Public Service
Neena Gill	United Kingdom	Public Service
Hari Babu Bindal	USA	Environmental Engineering
Bharat Haridas Barai	USA	Community Service
Nisha Desai Biswal	USA	Public Affairs
Mahesh Mehta	USA	Community Service
Ramesh Shah	USA	Community Service
Sampatkumar Sidramappa Shivangi	USA	Community Leadership

'प्रवासी भारतीय दिवस' की व्यवस्था अत्युत्तम थी। तीनों दिन प्रातःकालीन और अन्य सत्रों के कार्यक्रमों के उपरान्त एक विशाल भवन में सभी के लिए दिवस और रात्रिकाल के उत्तमोत्तम भोज का प्रबन्ध था। विशेष व्यक्तियों और वक्ताओं का अनेक मन्त्रियों, कर्नाटक के मुख्य मन्त्री और भारत के प्रधानमन्त्री की ओर से भोज दिया गया। भोज के लिए बड़े आकर्षक आमन्त्रण कार्ड द्वारा विशेष लोग आमन्त्रित किये गए। प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आमन्त्रण कार्ड इस प्रकार था –

भारत के प्रधान मन्त्री
आपको
प्रवासी भारतीय दिवस अभिसमय
के अवसर पर दोपहर के भोजन पर
सादर आमंत्रित करते हैं ।
रविवार, ८ जनवरी २०१७
गुलमोहर सम्मेलन केन्द्र
बैंगलोर अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी केन्द्र,
बैंगालुरू
समय : दोपहर ९.०० बजे ।

'प्रवासी भारतीय दिवस' के आयोजक आयोजन-कार्य में अत्यन्त निपुण थे। कहीं भी कोई अव्यवस्था दृष्टिगत नहीं हुई।

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

वर्षगाँठ का आयोजन

पृष्ठ १ का शेष भाग

मानव ऐसी कामना करता है कि वह लम्बी आयु प्राप्त करे। वह अपने प्रिय परमात्मा से विनती करता है कि वज्र की अर्थात् ऐसी शक्ति पाये, जो बिजली रूप हो। इतना तेज पाये कि मुश्किल से भी मुश्किल कार्य को करने में अपनी कुशलता दिखाये। पुराण की कथानुसार राजा इन्द्र को वज्र की शक्ति प्राप्त थी। आज का युग जहाँ आ खड़ा हुआ है, 'वज्र' जैसे तेज़ अस्त्र शायद ही किसी के पास हो । फिर भी मानव ऐसी कामना करता है, ताकि उसकी रक्षा हो। रक्षा हेतु वज्र की आवश्यकता है।

मंत्र में 'दीर्घायु' शब्द आया है। लम्बे समय तक जीवन बिताना मानव का एक सपना होता है। वह सांसारिक प्राणी है। इच्छा अनुसार जीना चाहता है। भौतिक जीवन के भोग-विलास में डूबा वह मानव संसार के सुन्दर दृश्यों को देखकर आनन्द लेना चाहता है। चाहे जीवन में अनेक दुख आयें, जीवन के अन्दर कई उतार-चढ़ाव आते-जाते रहें, पर उसे सांसारिक लीलाओं का भरपूर आनन्द चाहिए। वह ईश्वर से अपनी लम्बी आयु के लिए प्रार्थना करता है। यह संसार उसे प्रिय लगता है। संसार जीवों का बसेरा है। सभी प्राणी ऐसी कामना नहीं करते, पर मानव बुद्धिजीवी है, विचारता है। जीने की चाह उसे क्या-क्या नहीं कराता है। वह बन्धन में बन्धा वह प्राणी है, जो अपने परिवार की सुख-शान्ति के लिए जी तोड़ परिश्रम करता है। मेहनत करता है और दो वक्त की रोटी कमा लेता है। उससे बेहतर जीवन प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार की प्रक्रियाओं में मग्न हो जाता है। घर-परिवार को अत्यन्त सुख प्रदान करना चाहता है। दीर्घ जीवन के मोह में डूबा व्यक्ति कामनाओं को पूरा करता जाता है। ईश्वर की कृपा से मुश्किल से मुश्किल घड़ी का सामना करता जाता है। चाहे वह बीमार भी हो जाता है, परन्तु जीवन लम्बा हो, ऐसी कामना करता है।

मृत्यु पास आ जाती है, पर मानव अपने को शरीर छोड़ने में तैयार नहीं होता है। मन में डर बैठा रहता है कि घर-परिवार, रुपया-पैसा, धन आदि का क्या होगा। अपने पलंग पर पड़े, आधे दम वाले व्यक्ति अन्त समय में भी दीर्घायु प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करता है। मन चहुँ ओर भटकता रहता है। कुछ लोग तान्त्रिकों को पैसे खिलाते हैं। इस प्रलोभन से कि वह तान्त्रिक अपनी किसी विधि से उन्हें ठीक कर देगा। उस समय उन्हें रुपये-पैसों की कोई भी चिन्ता नहीं होती। तान्त्रिक जितना चाहे, उतना देता है। बस उसके प्राण बच जाएँ। ईश्वर का खेल वह मानव क्या जाने। तान्त्रिक को कुछ समय के लिए ईश्वर मान बैठता है। वह केवल दीर्घायु प्राप्त करने की चाह में ऐसा करता है।

जन्म और मृत्यु प्रकृति का एक नियम है। अन्धकार में पड़े लोग इसे देख नहीं पाते। संसार आनन्द स्वरूप है। मानव इसमें डूबता चला जाता है। कौन मृत्यु-शैय्या को अपनाना पसन्द करेगा? सांसारिक मनुष्य जिज्ञासु होता है। नयी-नयी बातें सामने आती रहती हैं। हर एक वस्तु प्राप्त करने के बाद भी वह संतुष्ट नहीं होता। बार-बार ईश्वर से कुछ न कुछ माँगता रहता है। चाहे अल्पायु तक जीना हो, पर इच्छा मरती नहीं ।

ओं तच्चक्षुर्देवहितम् ..... सौ वर्ष की आयु-प्राप्ति का मंत्र है। दीर्घायु के लिए प्रार्थना अवश्य करते हैं, परन्तु जिनका जीवन छोटा हो और किसी कारणवश वह लम्बी आयु तक जीवित नहीं रह सकता, उसका क्या किया जाए। वह हमेशा भ्रम में पड़ जायेगा कि यह मंत्र किस लिए है? तभी वह कामना करता है कि जब तक जीवन-दान मिला है, वह तब तक इस प्रकार जीये कि भरपूर आनन्द प्राप्त कर ले। उसे लगे कि कम समय में वह सौ वर्ष की आयु की खुशियाँ बटोर चुका। ऐसी सोच से अल्पायु प्राप्त करने से वह दुखी नहीं होगा। पल भर की खुशियाँ उसे आनन्द दे जायेगा। मानव यह कामना करता है कि वह इस प्रकार जीवन प्राप्त करे कि जीवन की हर खुशी उसके कदम चूमे। लम्बी आयु तक जीकर मृत्यु को प्राप्त होवे।

जिस प्रकार खरबूजा पक कर तैयार हो जाता है और फिर लता से स्वयं अलग हो जाता है, वैसे ही हम बचपन, यौवन पार करके बुढ़ापे का आनन्द लेकर, अत्यन्त कुशलता पूर्वक अपने जीवन को जीकर संसार को छोड़ें। प्रिय जनों को छोड़ने में कोई भी आपत्ति न होवे। जिस प्रकार धन के लोभी अपने धन को छोड़ना नहीं चाहता, वैसे ही कुछ लोग शरीर को नहीं छोड़ना चाहते। ऐसा होना नहीं चाहिए। संसार किराया का घर है। चाहे दीर्घायु के लिए हम प्रार्थना करते हैं, परन्तु उतना ही खुशी से जीयें, जितना ईश्वर ने हमारी झोली में जीवन डाला है।

cont. from pg 1

L'individualisme

Chaque individu a son propre potentiel et son style, c'est-à-dire, ses talents cachés (qui ne demandent qu'à s'épanouir dans des conditions favorables), son goût, son comportement, sa réaction face à n'importe qu'elle situation, sa façon de voir les choses et d'émettre son opinion, et sa façon de faire. C'est tout à fait normal qu'il y ait une diversité des goûts ou des aspirations parmi les gens dans leur choix de profession ou de métier. Mais cela ne leur pose aucun problème car il y a une variété d'options présentes dans les activités de plusieurs domaines de la vie pour satisfaire les goûts de tout le monde.

Le développement du potentiel de tout un chacun est indispensable et très bénéfique. Si cet exercice est mis en pratique nous allons voir quel haut niveau de perfection que certaines personnes peuvent atteindre dans les champs d'activités de leur choix et produire des résultats étonnants, voire extraordinaires. En voici quelques exemples.

(i) Le fameux lutteur indien, Ramurti Pahalwān, qui avait développé son potentiel physique, avait acquis une force herculéenne. Il pouvait entre autres exploits immobiliser deux automobiles à la fois et il pouvait même supporter un éléphant sur sa poitrine.

(ii) Dans l'acquisition et l'accumulation de la richesse, nous vous proposons le nom de M. Birla, un des plus grands hommes d'affaires indiens, propriétaire de 650 usines. Quand quelqu'un lui demanda un jour en Amérique s'il pouvait lui donner une idée de la valeur de ses affaires, voire ses biens. Il lui dit simplement ceci : "Si demain un pays comme La Hollande est à vendre, je pourrai l'acheter 37 fois selon mes moyens."

(iii) Pour le développement de sa capacité intellectuelle par l'acquisition de la connaissance, l'homme peut dans ce domaine devenir un géant intellectuel (un érudit, un génie, un savant, un scientiste, un grand artiste) tout comme l'écrivain Anglais, Johnson, qui a un record d'ouvrages à son actif.

A part l'écrivain Johnson il y a eu bien d'autres génies, savants, intellectuels, scientistes et humanistes qui ont transformé le monde et ont rendu la vie humaine très confortable par leur contribution, telles que les fruits de leurs recherches, des découvertes, des inventions entre autres dans tous les domaines – la santé, la médecine, la nourriture, l'agriculture, les différents moyens de communications et de transports rapides ' l'éducation, la technologie moderne, l'informatique, le logement, les vêtements etc.

(iv) Certains individus, ayant une foi inébranlable en Dieu, se consacrent entièrement à la vie spirituelle avec beaucoup de dévotion. Ils renoncent aux plaisirs du monde matériel, mènent une vie rude et austère, mortifient leurs corps et vivent comme reclus. Ils passent tout leur temps dans les activités spirituelles, en d'autres mots, la prière, la méditation et la pratique du yoga.

Finalement ils deviennent inconscients du monde extérieur, ils atteignent la communion parfaite avec L'Être Suprême -- le stage supérieur de la méditation (*Samādhi*) et peuvent rester des mois et des mois dans cet état car ils goûtent au bonheur suprême (*param-ānand*) et le Seigneur leur accorde l'intrépidité, la clairvoyance, et des vertus ou des pouvoirs extraordinaires. A ce stade ils deviennent des yogis.

N'oublions pas que le grand Swami Dayanand était aussi un yogi. Il pouvait même concentrer toute sa force à un point de son corps et faire des efforts surhumains. Par son regard puissant il impressionnait et calmait l'ardeur des adversaires les plus coriaces et les ramenait à de meilleurs sentiments, entre autres.

Pendant sa méditation un yogi peut entrer en communication avec un autre yogi, il peut même savoir ce qui se passe à un endroit plus éloigné, lire la pensée de n'importe qu'elle personne, ils peuvent marcher ou s'asseoir sur l'eau ou flotter dans l'air s'il le veut. Mais un vrai yogi se garde de toute publicité ou démonstration du pouvoir que Dieu lui a conféré Il vit en toute humilité comme un ermite.

En guise de conclusion nous pouvons dire que dans ce verset le Seigneur nous envoie un message très pertinent que les sages essayent de nous transmettre au mieux de leur moyen. D'abord, ils ont mis en exergue les bienfaits ou les résultats étonnants découlant du socialisme et de l'individualisme car ils sont tous deux nécessaires dans notre vie et ils se complémentent.

Puis, pour notre salut, ils nous conseillent de ne pencher la balance en faveur d'aucun de ces deux modes de vie, mais de la tenir égale, par des exercices spirituels (la pratique du yoga). Ils nous recommandent de trouver le juste milieu pour que nous puissions avoir une vie harmonieuse et bien réussie afin d'atteindre le Bonheur Suprême (*Moksha*).

N. Ghoorah

RISHI DAYANAND INSTITUTE

(Run by Arya Sabha Mauritius)

COMMUNIQUE

The Rishi Dayanand Institute will be running the following programmes :

1.1 Hindi for School Certificate & Higher School Certificate

1.2 Hinduism for School Certificate & Higher School Certificate

Teaching time : Saturdays 09.00 to 12.00hrs

2.0 Certificate & Diploma courses in Indian Philosophy

2.1 Certificate Level I :

(i) Practical applications of Patanjali Yoga in day-to-day life; (ii) Satyārtha Prakash Ch 1 & 2; (iii) Ishopanishad; (iv) Ideals in the Ramāyana

2.2 Certificate Level II :

(i) Essentials of Patanjali Yoga; (ii) Satyārtha Prakāsh Ch. 3 & 6; (iii) Kathopanishad; (iv) Karma Yoga in the Geeta

2.3 Diploma

(i) Patanjali Yoga; (ii) Satyārtha Prakāsh Ch 7,8,9,10 & Swamantavya-amantavya-prakāsh; (iii) Vyavahārbhānu (behaviour / ethics)

Entry Requirements :

» School Certificate with English, French

» Knowledge of Hindi / Hinduism would be an advantage

» Mature students with proof of experience and language proficiency (English & French) may also be admitted after evaluation.

» *Auditeurs libres* may also be admitted subject to prior arrangements.

Teaching medium : English & French

Teaching time : Saturdays 09.00 to 12.00 hrs

3.0 Siddhānta Ratna

Siddhānta Ratna :
(i) Satyārtha Prakāsh; (ii) Rāmāyana; (iii) Geeta

Entry Requirements :

Dharma Bhushan or Madhyamā or Vidyā Vāchaspati

Teaching medium : Hindi

Teaching time : Saturdays 13.00 to 15.00 hrs

For all above courses

Start Date : Saturday 04 February 2017
Venue : Rishi Dayanand Institute, Michael Leal Avenue, M2 Lane, Pailles

Interested parties are kindly requested to contact Arya Sabha Mauritius, 1 Maharishi Dayanand Street, Champ de Mars, Port Louis (Tel: 212 2730; email: aryamu@intnet.mu) for further details and application forms.

Dr. O. N. Gangoo
Academic Dean

Qualities of Swāmi Shraddhānand

The life of Swāmi Shraddhānand & the Satyārtha Prakāsh

Chapter 1: Attributes of God

Swāmi Shraddhānand, formerly known as Munshirām was once denied access to a temple. At that time an eminent personality was visiting the temple. That caused him to question his assumptions and beliefs. He realised that the concepts of God taught to him and prevailing among the public were not correct. He only understood the real concepts when he later listened to the sermons (talks on spiritual matters) of Maharishi Swāmi Dayānand Saraswati. He had ample opportunity to discuss with Swāmi to clear his doubts.

Chapter 2 & 3: Development of the self & Education

Munshiram's devoted spouse was instrumental to the change in his personality, like a mother who ceaselessly strive to mould the physical, moral / spiritual development of her child. His father convinced him to attend to the discourses of Maharishi Dayānand Saraswati, another turning point in his life to move away from vices and be a role model, a change-maker.

He founded a Gurukula for girls and thereafter the famous Kāngri Gurukula to empower people to be change agents for a better society and a better India where people would not only grow to be bread-earners but to be real human beings, caring for the whole world … and he admitted his own children as the first students of the Gurukula … ***leading-by-example!*** He looked upon all alike, with not the slightest favour for his own children.

Indra and Harish were exemplary children who lived to regret the one-and-only time where they questioned their father, Munshiram on their admission to the Gurukula.

Chapter 4 : Married life

After the turn around in his life, he did his utmost to uphold his duties as a husband and a father. Upon the demise of his wife, he did not remarry, stayed within an extended family. His brother and sister in law were of tremendous support to him, caring for his children as he was left with little time with his social commitments. Munshiram converted those moments into quality time spent with the family.

Chapter 5 : Ascetics (*Vānprastha*) & Renunciation (*Sanyāsa*)

He stayed at the Arya Samaj Mandir to complete the fund-raising for the Kangri Gurukula. He voluntary remitted all his personal property for the advancement of the Gurukula. Those events, referred as sarvamedha *yajna*, reveal the high level of *viveka* (wisdom, discernment) and *vairāgya* (detachment).

After initiation into *sanyāsa* he took the name of Shraddhānand, which was in line with the dedication and commitment to the causes he was advocating and fighting for as well as in whatever initiatives he embarked upon, indeed a pragmatic personality.

Chapter 6 : Politics

Swāmi Shraddhānand took a very active part in politics, conducting several meetings of the Congress party with outstanding leadership skills when the then current leaders failed to rally the masses to face the oppression of the British rulers, especially after the Jalianwala Bagh firing where thousands of innocent men, women and children died. He called upon the leaders to be role models with harmony in thoughts, speech and actions as well as exemplary character, deeds and temper.

He was the first person to call for *satyāgraha* and to reaffirm his commitment to strive for an independent India. He later resigned from the Congress party at the least signal that his attachment to truth, meritocracy, etc. was a hindrance to other leaders of the party. He had realised that the party was full of opportunists and resolved to sensitise the masses to be of upright conduct (*sadāchāra*). He was the first one to use the term Dalit and advocate for the social inclusion of the down-trodden, the vulnerable and the needy.

In fact Gandhi walked into the Gurukula as Mr. Gandhi and left as Mahātmā Gandhi, Swāmi Shraddhānand was the first to call him Mahātmā for his involvement in the social field.

Chapter 7 : Vedas

Over and above being a passionate truth-seeker and an ardent student of the Vedas, Swāmi Shraddhānand was an efficient and effective preacher through the four-fold process of *Shravana, Manana, Nididyāsana* and *Sākshātkāra* (study, contemplation, analysis of the pros & cons and realisation). He founded Gurukulas, as prescribed in the Satyārtha Prakāsh to revive the study of the Vedas, thus pave the way for people to willingly adopt the Vedic values in their daily life.

Chapter 8 : The Universe

He often retreated in isolation for introspection, surrendering to the Almighty (*Ishvara-pranidhāna*). Swāmi Shraddhānand is reported to have often referred to the whole human race as *Ishvara putra*, i.e. sons of the one-and-only God, the Generator or creator, Operator or sustainer and the Dissolver of the universe.

Chapter 9 : Knowledge v Ignorance

Swāmi Shraddhānand stood guided by the Vedic precepts of truth, decried the social evils resulting from untruth, ignorance, blind faith, etc. Once he was sick and stated that he would like to be born again in India, as a human being, to continue the work that he was doing.

Chapter 10 : Conduct

His meeting with Maharishi Dayānand Saraswati was a catalyst for the turnaround in his life, after which he lived as a role model embodying that is desirable conduct.

Swāmi Shraddhānand had an unwavering faith in the teachings of the Satyārtha Prakāsh. When British police officers searched the Kangri Gurukula for bombs, he showed them the Brahmachāris as 'bombs-in-the-manufacturing-process' who would be the change agents, like bombs exploding to wipe out ignorance, injustice, tyranny, oppression and other evils as well as spread true knowledge, justice, good governance which would benefit the human race. He further offered a copy of the Satyārtha Prakāsh to the British officers requesting them to study the masterpiece and "become very good bombs!"

He was an exceptional leader calling for people to be strong-minded on the principles of *Dharma* (virtuous living.) He was the host bearing his sacrifices (*apne yajna ke yajmān khud hota thā*). His goal was only to realise the goals set out by Maharishi Dayānand. He considered the Vedas and the Arya Samaj as a mother, moulding his personality and giving a sense of direction to his life. He even faced, bare-chest, the British soldiers requesting them to fire and that stirred-up the officers who had no alternative than to retreat in deep humiliation.

He had refused aid from the Viceroy who visited the Kangri Gurukula. He did not take risks where he might thereafter bend to the British who would later impose their systems and dilute or halt the emphasis on Vedic values.

In spite of a very tight schedule he never abandoned *svādhyāya*, the study of the scripture. He described *svādhyāya* as a huge heritage from the Vedic seers (*rishis*) and which is a substantial part and parcel of human history (*sansāra ki badi virāsat aur mahān itihās ka hissā*). That instilled in him the strong-iron mind and by his thoughts, speech and actions he caused the world to bow to him.

Tributes paid to Swāmi Shraddhānand include :

…a firebrick in the furnace of Maharishi Dayanand (*Dayānand ki Bhatti mein inta*)

…the crown jewel of the Gurukula system of education and the return of people misled by conversion (*Gurukulaiya vyavasthā, shuddhi āndolan ka gaurava*)

…proved his mettle by living as per the teachings of the Vedas and seers / rishis (*mana vāni aur shareera se rishi paramparā ko sākāra kiya*)

…gave new direction to society though his thoughts, words and deeds (*apne vichāron aur karyon se samāj ko naya deesha diyā*)

…an ideal statesman in whose life each word, incident or action left its imprint on stone (*aise ādarsh mahāpurusha jiske jeevan mein har ek shabda, ghatnā va kāma patthar pe lakeer jaisa ban jāta thā*)

…unmoved by critics, blame, rejection, and defamation, he was focused on objectives (*nindā bahishkār apmāna bhi huvā lekin lakshya ko nahin choda*).

There is a lot to learn from the life of this towering personality. A real tribute from us would be to dedicate quality time to study the various facets of his life and draw inspiration therefrom. In turn we shall grow into excellent bombs, *acche bombs*", i.e. become change agents for a better society.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, *Darshanāchārya*
(Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya, Rojad, Gujarat, India)
Arya Sabhā Mauritius
Email : bmukundlall.arya@gmail.com

Bibliography : *Mere pitā (Indra Vāchaspati) Āhwān* (The Call of Truth) | Biography of Swāmi Shraddhānand (Vichār TV, India)

[Editorial Note : The above is, in essence, the address through a Power Point presentation & video clips at Arya Bhavan, Port Louis on 23.12.2016 in the context of the Swāmi Shraddhānand Balidān Divas.]

Essence of Makar Sankranti

Sookraj Bissessur, B.A, Hons.

Makar Sankranti's celebration has now acquired an international dimension. Uttarayana, the festival which coincides with Makar Sankranti (January 14 every year) brings the northern belt of India, in particular Gujarat alive with the immense flutter of kites. This festival has attracted kite flyers from countries as diverse as Ukraine and France, who fly to India to enjoy the experience as well as to contribute their elaborate 'Creations' and to add an extra dimension to kite flying festival.

The traditional celebration can be seen in crowded areas of Ahmedabad, Vadora, Surat and other urban centres of Gujarat. Come January and the huge preparations go in full swing. Children bring a whiff of excitement as they spend their spare time practicing for the big day. 'Manjhas' cotton threads coated with glass, rice, paste, chemicals and other abrasive material is give them the tensile power and strength and that cutting edges are prepared in every street corner, then rolled on spools called 'firkis'. Artisans make the kites, utilizing paper and bamboo.

Makar Sankranti is a festival based on Astronomy. It falls on January 14 every year. Many indulge in the erroneous belief that Sankranti augurs the New Year of Hindus. In reality the Panchang (Indian Calendar) states that the New Year starts on Chaitra Pratipada or Yugadi festival which marks the creation of the universe. Chaitra is the first month of the Indian Calendar and Pratipada is the first day of that month.

Makar is a zodiac sign and Sankranti means evolution movement. Primitive India is famous for its eminent astronomers who explored the Milky Way and other constellations. They were among the first to affirm that the earth revolves round the sun from one Rashi (Zodiac) sign to another. When the revolution starts in Capricorn, the festival of Makar Sankranti is celebrated. The earth revolves for thirty days in this Rashi.

There is one Sankranti in each of the twelve Rashis, total of 12 annually. The twelve Rashis have been names as follows: Mesha (aries), Vrishabha (Taurus), Mithun (Gemini), Karka (Cancer), Simha (Leo), Kanya (Virgo), Tula (Libra). Vrishchika (Scorpion), Dhanu Sagittarius), Makar (Capricorn), Kumbha (Aquarius) and Meena (Pisces).

Why is it that only Makar Sankranti is celebrated?

Makar Sankranti marks the shift from Dakshinayana to Uttarayana, a period of intense light. Makar Sankranti is celebrated to mark the saur varsha or solar Year. Sages have prescribed prayers to celebrated festivals. Rejoicing comes later. The Vedas states that GOD (the Supreme Creator, Operator and Dissolver of the Universe), through is power controls the sun the very wheel of time. He is the only One worthy of worship.

Makar Sankranti relates to the sun and the movement of the earth. The grace of God is invoked through fervent prayers, so that everyone may be blessed with a good times.

Many also seize this opportunity to indulge in various practices like (i) bathing at the confluence of the rivers Ganga and Yamuna in Allahabad at the crack of the dawn on Makar Sankranti; (ii) adding sesame to savouries; (iii) wearing new clothes; and (iv) visit to family members, friends and relatives.

Khichri festival

Also known as the Khichri festival in the north on India, khichri and sesame energises the whole body. Families also remember those who have left the fold and tie new relationships with others. It is also customary in certain regions to offer gifts to parents, friends and relatives on this occasion.

Veneration of Cows

In certain regions of India the veneration of cows constitute a main feature in the celebrations of Makar Sankranti. Bulls and cows are given a bath and their horns painted. Decorated with beautiful and fascinating flowers, garlands, and twinkling bells, these animals are then taken out in the villages.

Kite flying

Kite flying is another feature already pointed out at outset of this article. The brilliant colours signify hope, its size in relation to the sky symbolizes the minuteness of Man in front of the Almighty and its thread reminds us that the rope of our life is being controlled by the Almighty / God. When he let go of that, we meet our end.

Festivals are not only feasts and worship. They also act as social cement which brings people in total harmony, strengthening brotherhood, love, peace, mutual respect and understanding. The observance of festivals has always symbolised the fundamental values of life.

Festivals are also happy occasions that enrich social life, rejuvenating congenial relationship within the family and society.

Happy & Joyful Makar Sankranti to one and all.

CORRIGENDUM

Aryodaye No. 349 & Youth Magazine No. 4 of December 2016

Article : Domestic Violence
Author : Mrs. Yalini Rughoo-Yallappa B.A., P.G.C.E.

Last but one line : *In the modern society the trend has changed and values like love, respect, loyalty are regressing and expanding.*

Please read :

In the modern society the trend has changed and values like love, respect, loyalty are regressing and domestic violence expanding.

इतिहास के अनमोल रत्न से लाभ उठाए

पं० सहदेव पं० नेहरू से मिले

मॉरिशस के समस्त मज़दूर तथा छोटे किसान भाइयों को ज्ञात हो कि कलकत्ते में पैर रखते ही पुलिस इंस्पेक्टर ने मुझे गिरफ़्तार कर लिया था। मुझ से इनक्बाईरी लेकर ६-७ घंटे बाद छोड़ दिया। मेरे पीछे सी०आई०डी० लगा दी । यह सब कार्यवाही किसकी होगी इसे आप जानकार हैं। दो दिन बाद मैं इलाहाबाद पं० जवाहरलाल नेहरू जी से भेंट की। अपने गृह पर पंडित जी ने मेरा प्रेमपूर्वक मान आदर किया। आप गरीबों का विवरण मैंने सुनाया। पूज्य पंडित जी ने आश्वासन दिया कि वे ज़रूर इस पर विशेष ध्यान देंगे । मेरे रहने का प्रबन्ध वहीं पर अपने योग्य सेक्रेटेरी के गृह पर कर दिया। अत्यन्त शोक है कि पंडित जी की राजमाता का देहान्त १०.१०.१९३८ को हो गया और मौसी का ११.०१.३८ को हुआ। मॉरीशस वासियों की राजमाता शोक दिवस मनाना चाहिए क्योंकि भारत भर में हरताल और शोक दिवस मनाया जा रहा है।

आर्य वीर १८ जनवरी १९३८

प्रेषक : प्रह्लाद रामशरण